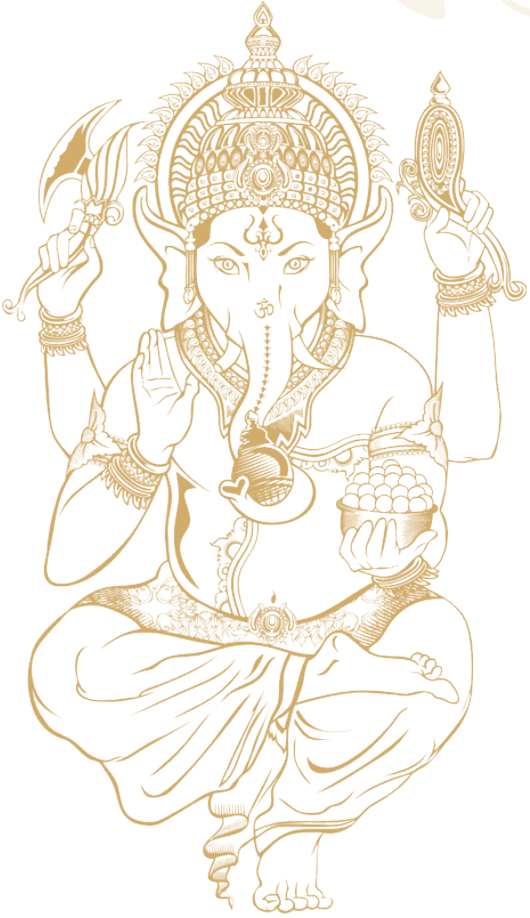

Pratibha Pandey

22 Dec 2022

03:56 PM

Gorakhpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121833201

तिथि 22/12/2022 **समय** 15:56:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Gorakhpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:10:29
अक्षांश 26:45:00 उत्तर **रेखांश** 83:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:03:32 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	22:03:23 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:01:33 घं	योनि	मृग
सूर्योदय	06:41:26 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:08:41 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2079	वश्य	कीटक
शक संवत	1944	वर्ग	मृग
मास	पौष	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	14	जन्म नामाक्षर	या-यामिनी
नक्षत्र	ज्येष्ठा	पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
योग	शूल	होरा	सूर्य
करण	शकुनि	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
बुध 9वर्ष 7मा 12दि		भद्रिका 2वर्ष 9मा 28दि	
बुध		उल्का	
22/12/2022		20/10/2025	
04/08/2032		21/10/2031	
	00/00/0000	उल्का	20/10/2026
	00/00/0000	सिद्धा	21/12/2027
	00/00/0000	संकटा	21/04/2029
	22/12/2022	मंगला	20/06/2029
चन्द्र	03/02/2024	पिंगला	20/10/2029
मंगल	30/01/2025	धान्या	21/04/2030
राहु	19/08/2027	भ्रामरी	20/12/2030
गुरु	24/11/2029	भद्रिका	21/10/2031
शनि	04/08/2032		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:03:44	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	केतु	---	0:00			
सूर्य			06:21:41	धनु	मूल	2	केतु	राहु	मित्र राशि	1.42	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			22:27:28	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	चंद्र	नीच राशि	1.37	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल	व		17:01:35	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	सम राशि	1.31	पुत्र	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			26:25:16	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	सम राशि	0.93	अमात्य	ज्ञाति	विपत
गुरु			05:59:29	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	स्वराशि	1.16	कलत्र	धन	अतिमित्र
शुक्र			21:13:06	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	गुरु	सम राशि	0.82	मातृ	कलत्र	विपत
शनि			27:20:01	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	गुरु	स्वराशि	1.31	आत्मा	आयु	साधक
राहु	व		18:16:09	मेष	भरणी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		18:16:09	तुला	स्वाति	4	राहु	चंद्र	सम राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

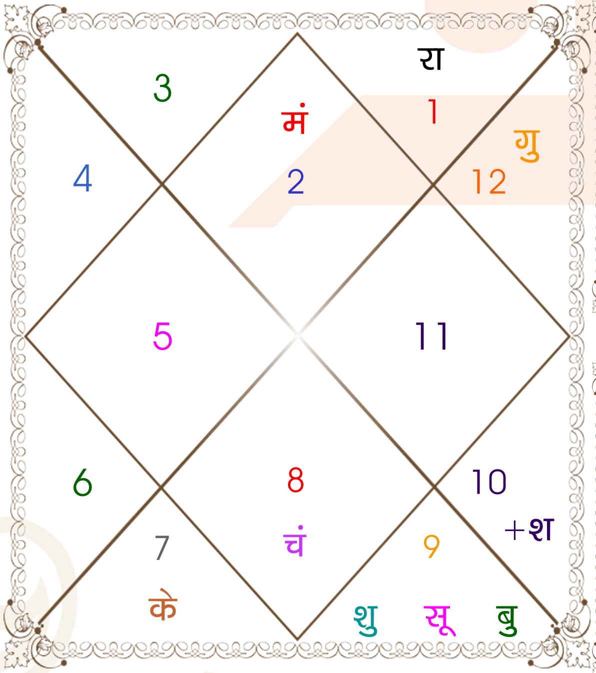

चन्द्र कुंडली

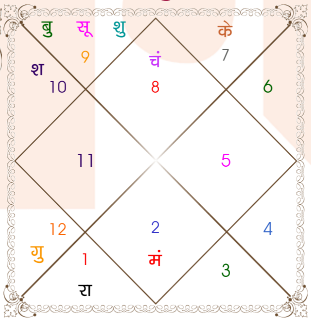

नवमांश कुंडली

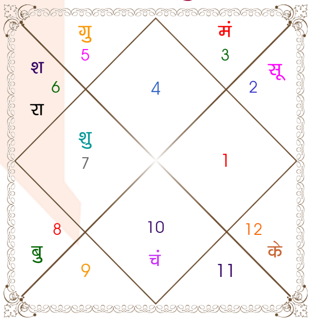

सर्वाष्टकवर्ग

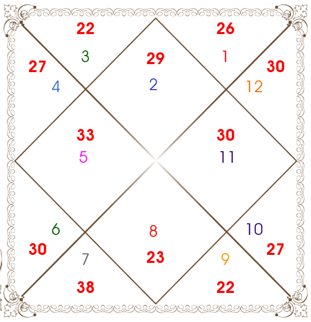

दशमांश कुंडली

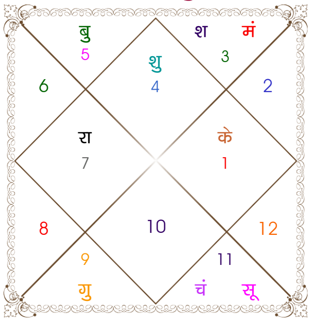

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशिस्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग मृग, योनि मृग, गण राक्षस तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर ”य” या ”या” से प्रारम्भ होगा यथा- यामिनी आदि।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है इसके द्वितीय चरण में उत्पन्न होने से जातक के छोटे भाई को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि से शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए। 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से जप हवनादि करने से नक्षत्र की शान्ति हो जाती है।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप अपने समाज में एक ख्याति प्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक प्रसिद्ध रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा कान्ति एवं लावण्यता की उसमे बहुलता दर्शनीय रहेगी। आप नाना प्रकार के धन वैभव से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगी। अपने समस्त कार्यों को सिद्ध करने में आप स्वयं सक्षम रहेंगी। आपका पराक्रम भी समाज में व्याप्त रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को हृदय से स्वीकार करेंगे। आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपको श्रेष्ठ एवं पूजनीय समझेंगे। आप भाषण देने की कला में अत्यन्त ही निपुण होंगी तथा अपने भाषणों से अन्य जनों को खूब प्रभावित करेंगी।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
शेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरुषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही क्रोधी होगा तथा कभी कभी इसकी प्रवलता के कारण आपको कई प्रकार की हानि भी उठानी पड़ेगी। समाज में अन्य जनों से भी आपके मधुर संबंध

रहेंगे। आप एक आस्तिक महिला होंगी तथा अपने जीवन में धर्मानुपालन करने में सर्वथा तत्पर रहेंगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपके मित्रों की संख्या अधिक मात्रा में रहेगी तथा मित्र मण्डली में आप प्रमुख तथा लोकप्रिय रहेंगी। आपका स्वभाव सन्तोष से युक्त रहेगा एवं धन की यथाशक्ति उपलब्धि पर ही सन्तुष्ट रहेंगी तथा अनाश्यक इच्छाएं नहीं रखेंगी परन्तु धर्माचरण में रत रहते हुए भी आप का अपने क्रोधी स्वभाव पर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आप लेखन कार्य में भी पूर्ण रूप से रूचिशील तथा तत्पर रहेंगी फलतः काव्य लेखन में आप सफलता प्राप्त कर सकेगी। आप एक सहनशील महिला होंगी तथा सुख दुख की समान अनुभूति करेंगी। आप चतुराई के गुण से भी सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त निम्न श्रेणी के लोगों में आपका विशेष प्रभाव रहेगा तथा ये लोग आपको अत्यन्त ही पूजनीय समझेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति

सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

वृश्चिक राशि में जन्म होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत रहेगा तथा आखें भी सुन्दर एवं बड़ी बड़ी होंगी। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का समिश्रण रहेगा। आपके हाथ या पैर में कहीं पर मछली का निशान भी हो सकता है। साथ ही आपकी अधिकांश हस्त रेखाएं पक्षी एवं वज्र के आकार की रहेगी। गुरुजनों तथा माता पिता से आपके अच्छे संबंध रहेंगे। अतः आप इनसे सहयोग भी प्राप्त करेंगी। बाल्यावस्था में आप काफी बीमार भी रहेंगी। आप एक तीव्र बुद्धि एवं परिश्रमी महिला होगी। अतः सरकारी क्षेत्र में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित कर सकेंगी। आपकी क्रूर तथा कठोर कार्य करने में अधिक इच्छा रहेगी। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्य क्षेत्र बना सकती हैं।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरुजानुः।
जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपके पेट एवं मस्तक की आकृति भी दीर्घ होगी तथा मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। अन्य जनों की वस्तुओं को देखकर आप में इस भाव की अधिक ही प्रबलता होगी। आपके शरीर में कान्ति तथा कोमलता का भाव परिलक्षित होगा। स्वभाव से ही धर्म एवं ईश्वर के प्रति आप आस्था प्रकट करेंगी। आपके ठोड़ी तथा नाखूनों में भी चोटादि का निशान होगा। आप हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगी तथा कार्य को सम्पन्न करने में अत्यन्त ही प्रवीण होंगी। आप बन्धु वर्ग से भी सहयोग प्राप्त कर सकेंगी। आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा तथा आपके प्रताप को सभी जन स्वीकार करेंगे। आप में स्वाभाविक उग्रता भी विद्यमान रहेगी एवं सरकार द्वारा आप धनहानि भी प्राप्त करेंगी।

लुब्धो वृतोरुजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारुनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप विपुल धन की स्वामिनी होंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों को भी सुख प्रदान करने वाली होंगी। पुरुषों के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता रहेगा। राजकीय सेवा में भी आपकी नियुक्ति हो सकेगी। आपके मन में अन्य के धन को प्राप्त करने की इच्छा अत्यन्त ही बलवती रहेगी तथा समय समय पर आप इसके लिए यत्नशील भी रहेंगी। आपकी बुद्धि दृढ़ होगी तथा अपने जीवन के कार्यकलापों को दृढता से ही सम्पन्न करेंगी। किसी न किसी कार्य

को करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी तथा अपने साहस से अधिकांश कार्यो को सफलता से अर्जित करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थ नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने में उत्सुकता प्रकट करेंगी परन्तु इसमें आपको आर्थिक हानि ही अधिक होगी। अत्याधिक क्रोधी स्वभाव होने के कारण आपका अन्य लोगों से विवाद आदि चलता रहेगा। आप हृदय से निर्बलता का अहसास करेंगी तथा अधिकांशतः अशान्ति की ही अनुभूति आपको रहेगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यकाल से ही अपने घर से अन्य स्थान में निवास करेंगी तथा आपका स्वभाव भ्रमण प्रिय भी रहेगा। आप एक अभिमानी महिला होंगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। अपने बन्धु तथा संबंधियों से आपका लगाव रहेगा तथा अपनी साहसी प्रवृति से धनार्जन करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। आप चतुराई का भी भी प्रदर्शन करेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाली होंगी। आपके मन में कठोरता की प्रबलता रहेगी तथा कोमल भावनाओं की अल्पता रहेगी। आप स्वभाव से उग्र रहेंगी तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाया करेंगी। आपका स्वभाव अन्य लोगों से विवाद करने वाला भी होगा एवं प्रायः ये विवाद आपके होते ही रहेंगे। आप में शारीरिक बल का अभाव नहीं रहेगा तथा स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा परन्तु समाज के अन्य लोगों का आपके प्रति विरोध भाव रहेगा। आप स्वभाव से साहसी भी होंगी। तथा साहस पूर्वक अपने अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल हो सकती है। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर होगा तथा आप यदा कदा कठोर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगी जिससे अन्य जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यन्पूर्वक अपने वार्तालाप मधुर

शब्दों का ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रिय रहेंगी एवं अपने समस्त कार्य कलापों को बिना किसी हस्तक्षेप के ही सम्पन्न करना चाहेंगी। आप शान्त प्रवृति की महिला होगी तथा हिंसा आदि के भाव का आप में अभाव रहेगा। आपकी आजीविका अर्जन के साधन भी उत्तम रहेंगे। सत्य का अनुपालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेगी तथा अपने बन्धुवर्ग एवं सम्बन्धियों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी। सभी लोग आपको स्नेह प्रदान करेंगे। धर्म तथा ईश्वर के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं धर्माचरण में सर्वथा तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप निर्भीक एवं साहसी महिला होंगी तथा विवादादि क्षेत्र में प्रायः सफलता ही प्राप्त करेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण

कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा अनिष्ट फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति विशेष सतर्क रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं या अन्य शुभ कार्य सफल नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए एवं नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोम तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी योग्य पात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर शुभ प्रभाव

बढेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।